कहानी वाला कंबल

फेरिडा

कहानी वाला कंबल

फेरिडा

बर्फ से ढके पहाड़ों की गहराई में एक छोटा सा गाँव था जहाँ बब्बा ज़ाराह रहती थीं. बच्चों को उनके घर में आना बहुत पसंद था. बच्चे, बब्बा ज़ाराह के बड़े कंबल पर बैठकर उनकी रोचक कहानियों को बड़े चाव से सुनते थे.

एक दिन बब्बा ज़ाराह की नजर निकोलाई के मोज़े के छेद पर पड़ी.
बच्चों के जाने के बाद उन्होंने निकोलाई के लिए एक जोड़ी अच्छे, गर्म मोजे बुनने का मन बनाया. लेकिन उस साल सर्दियों में इतनी बर्फ गिरी थी कि ऊन पहुंचाने के लिए गांव में कोई आ ही नहीं सकता था. फिर ऊन के बिना भला वो मोजे कैसे बुनतीं?
"कोई सवाल है तो उसका कोई जवाब भी होगा," बब्बा ज़ाराह ने कहा. "मुझे बस उसके बारे में कुछ सोचना पड़ेगा."
फिर सोचने में मदद के लिए उन्होंने एक गिलास मीठी चाय पी.
तीन चुस्की लेने के बाद ही क्या करना है यह बब्बा ज़ाराह को स्पष्ट हो गया.

"मैं कहानी वाले कम्बल को उधेड़ूंगी और उसका ऊन निकोलाई के मोज़ों के लिए उपयोग करूँगी!" उन्होंने कहा.

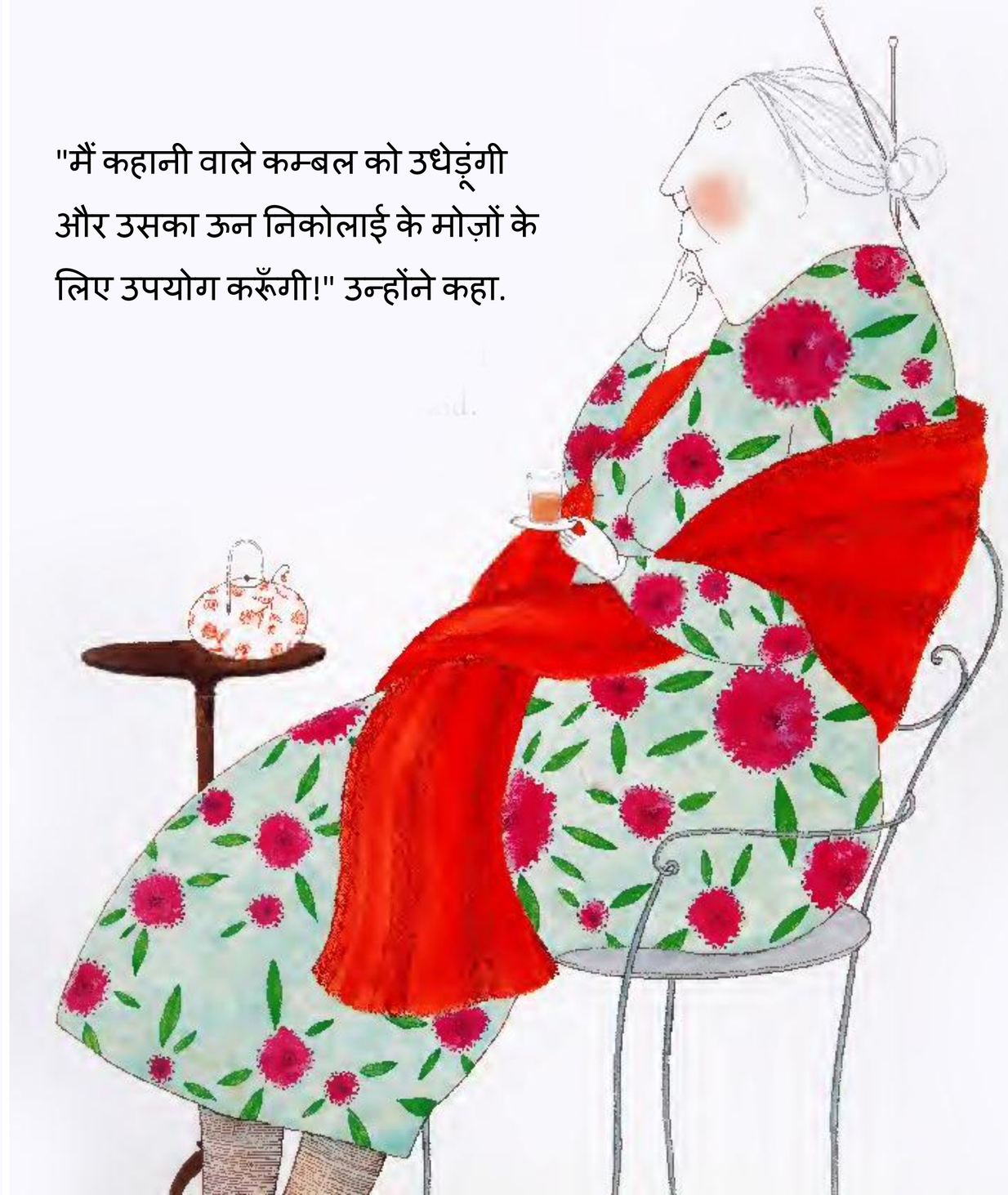

देर रात जब सभी सो रहे थे, तब बब्बा ज़ाराह ने बर्फ पर ट्रेक किया और निकोलाई के दरवाजे पर जाकर मोजे छोड़ आईं.

इसके तुरंत बाद, जब डाकिया अपनी सुबह की ड्यूटी
पर निकला तो उसे अपने डाक के थैले के चारों ओर
एक ऊनी मफलर लिपटा हुआ मिला.
"क्या आपको पता कि इसे किसने बनाया?"
डाकिए ने सभी लोगों से पूछा.
लेकिन किसी को भी उसके बारे में नहीं पता था.

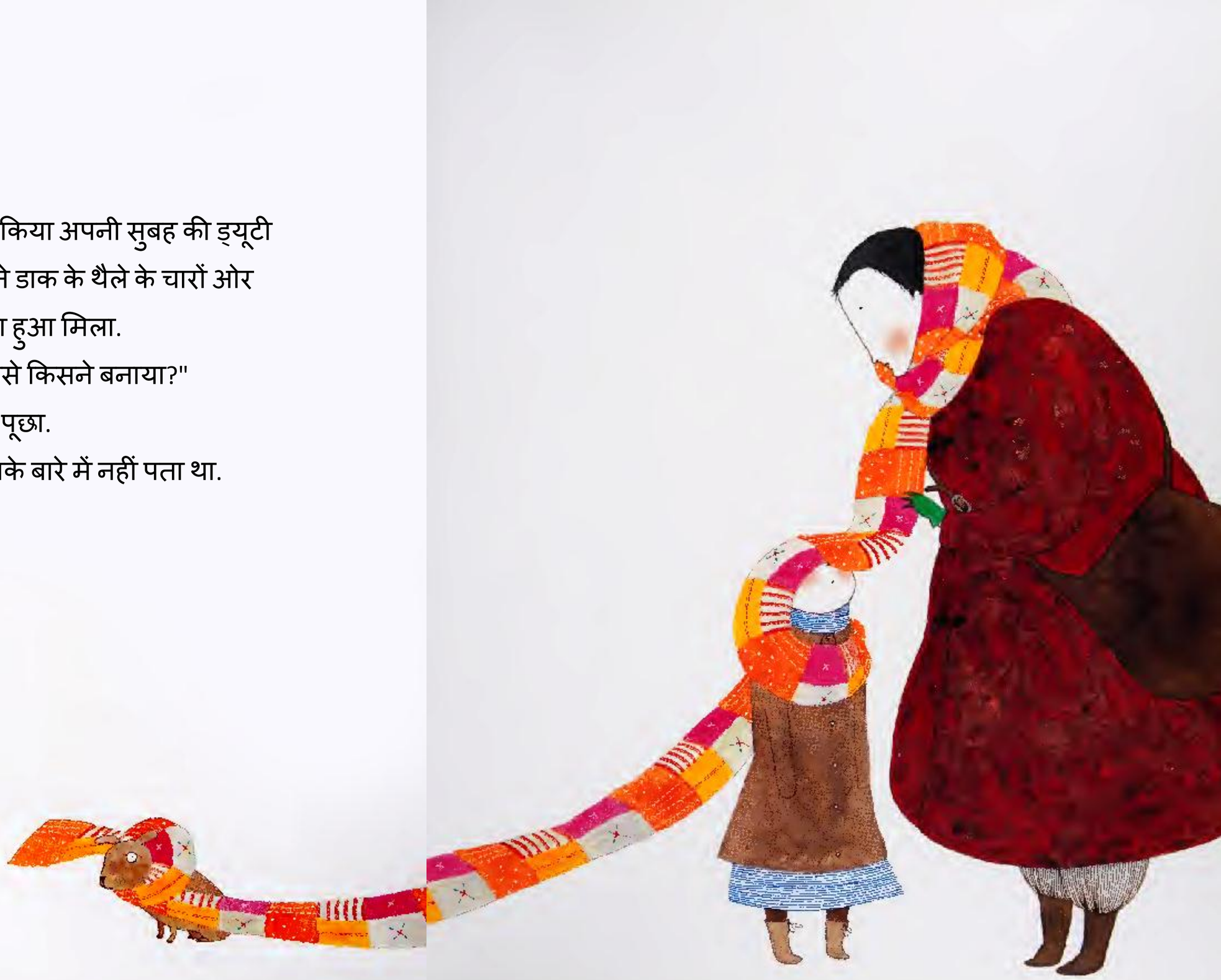

जब मास्टर साहिब स्कूल को गर्म करने के लिए बाहर से लकड़ियां लाने गए तो उन्हें लकड़ी के ढेर पर एक जोड़ी ऊनी दस्ताने रखे हुए मिले.

फिर अगले दिन श्रीमती इवानोव को पानी के पंप के पास कौओं को उड़ाते हुए एक नया बुना हुआ ऊनी एप्रन मिला.

कुछ समय बाद, सब्ज़ी वाली औरत को लोगों ने उसके फटे-पुराने शाल की बजाए एक नया रंगीन शॉल पहने हुए देखा.

अब कहानी सुनने आने वाले बच्चों के लिए कंबल छोटा पड़ने लगा. अब बच्चों को छोटे कम्बल पर एक-दूसरे के साथ सटकर बैठना पड़ता.

दिन-ब-दिन, गांव वालों की उत्सुकता बढ़ती गई.
बेबी ओल्गा को एक रहस्यमय नया नरम, कंबल
मिला. फिर कुछ दिन बाद लोगों ने कसाई के गंजे
सिर पर एक फैंसी ऊनी टोपी देखी.
कम्बल छोटा होने के कारण अब बच्चों को उस पर
एकदम सिकुड़ कर बैठना पड़ता था.

लोगों का भ्रम तब और बढ़ा जब उन्होंने दर्जी की
बिल्ली को अचानक एक गर्म, रोयेंदार कोट में गुर्राते
हुए देखा.
फिर कहानी सुनने वाले बच्चों के बैठने के लिए कंबल
बिल्कुल भी नहीं बचा.

फिर सब गांव वाले मिलकर मेयर के पास गए से और उन्होंने उनसे इस रहस्य को सुलझाने में मदद मांगी.
"बब्बा ज़ाराह हमेशा क्या कहती हैं, वो आप सभी लोगों को पता ही है," मेयर ने जवाब दिया.
"अगर सवाल है तो उसका कोई जवाब भी ज़रूर होगा."
जब बच्चों ने मोज़े, मफलर, दस्ताने, एप्रन, शॉल, टोपी, छोटे बच्चे का कंबल और बिल्ली को एक साथ ऊनी कोट पहने देखा, तो वे सभी मिलकर चिल्लाए, "हमें ऐसा लगता है जैसे यह सब चीज़ें बब्बा ज़ाराह के पुराने कंबल की बनी हैं!"
निकोलाई ने कहा, ''लेकिन उनके पास अब कोई दूसरा कम्बल नहीं है.''
"अहा!" महापौर ने मुस्कुराते हुए कहा, "तो बब्बा ज़ाराह ने इन सब चीज़ों को बनाने के लिए अपने कंबल के ऊन का इस्तेमाल किया! अब हम सबकी बारी है बब्बा ज़ाराह को कोई तोहफा देने की."

इसलिए जब बब्बा ज़ाराह सो रही थीं, तब उस रात हर घर में, हर कंबल में से कुछ ऊन उधेड़ा गया. और फिर वो सारा ऊन बब्बा ज़ाराह के दरवाजे पर छोड़ दिया गया.

सुबह जब बब्बा ज़ाराह ने अपना दरवाजा खोला तो बब्बा ज़ाराह चकित रह गईं. रंग-बिरंगा, इतना सारा ऊन, उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था. उस तोहफे के ऊपर एक चिट चिपकी थी:

अगली बार जब बच्चे कहानी सुनने के लिए बब्बा ज़ाराह के पास गए, तो वहां वो एक नए रंगीन कंबल पर बैठे. फिर बब्बा ज़ाराह ने उन्हें उस गाँव की कहानी सुनाई जहाँ पर हर कोई, एक-दूसरे की मदद करता था और हरेक के साथ अपनी चीज़ें साझा करता था.

जाते वक्त बब्बा ज़ाराह, जब बच्चों को गले लगाकर अलविदा कह रही थीं, तब उन्हें एलेक्जेंड्रा के स्वेटर में एक छेद दिखाई दिया. वो एलेक्जेंड्रा को आश्चर्यचकित करना चाहती थीं, लेकिन पहाड़ियों अभी भी बर्फ से ढंकी थीं और पूरे गाँव में कहीं भी ऊन नहीं था.

बब्बा ज़ाराह को इतना पता था कि अगर सवाल है, तो उसका कोई जवाब भी ज़रूर होगा. फिर उन्होंने अपने कहानी वाले नए कंबल को देखा और वो मुस्कुराईं.

समाप्त